मोहनजी –

[होंठों में ही] – अरे रामसा पीर। यह नार तो नीचे जाती दिखायी देती नहीं, अगर यह कमबख़्त यहाँ इतनी देर यहाँ खड़ी रह गयी तो सर-दर्द अलग से पैदा कर देगी।

[अब उठने के पहले, वे हमेशा की तरह जोधपुर के क़िले के दीदार करना चाहते हैं। इधर-उधर नज़र दौड़ाकर, वे क़िले को देखने की कोशिश करते हैं। और साथ में, कहते जाते हैं..]

मोहनजी –

[क़िले के सामने नज़र दौड़ाते हुए] – अरे ठोकिरा कढ़ी खायोड़ा मेहरान गढ़ के क़िले, तू कहाँ जा रिया है...?

लाडी बाई –

[ग़ुस्से से बेक़ाबू होकर, कहती है] – कहीं नहीं जा रहा है, यह जोधपुर का क़िला। कल जहाँ था, आज भी वहीं है।

मोहनजी –

क्या कहा, आपने?

लाडी बाई –

मारवाड़ के लोगों की हालत यह है, कि इस जोधपुर के क़िले को देखे बिना, उनके हलक़ से रोटी का निवाला नीचे नहीं उतरता।

रशीद भाई –

[रोनी सूरत बनाकर, कहते हैं] – मालिक, चेहरे पर मुस्कान कैसे छा सकती है? पेट के अन्दर तो, अभी से चूहे कूद रहे हैं..इधर आप, ज़बानी कढ़ी खिलाकर भूख को और बढ़ाते जा रहे हैं।

मोहनजी –

सुनो मेरी बात, पेट में रोटी-बाटी ठोककर आये हैं अपुन सब। मगर खाए हुए, काफ़ी वक़्त गुज़र चुका है। इसलिए पहले....

रशीद भाई –

[मुस्कराकर, कहते हैं] – पाली का गुलाब हलवा खिलाओगे, साहब..?

मोहनजी –

अरे नहीं रे, कढ़ी खायोड़ा। सबसे पहले, ठेकेदार साहब से मँगवायेंगे गरमा-गरम मिर्ची बड़े। इसके बाद, चाय-वाय मँगवाकर पी लेंगे भाई..ताकि थकावट दूर हो जायेगी रे कढ़ी खायोड़ा..समझ गये, रशीद भाई?

मोहनजी –

[लबों पर मुस्कान लाकर] – आ जाइए, कमरे के अन्दर..आपको पूरी फ़िल्म दिखला दूँगा। फिर दे दूँगा मैं, मेरी मोहब्बत का सबूत। झट आ जाओ, इस वक़्त बदमाश गीगला भी घर पर नहीं।

लाडी बाई –

[ग़ुस्से में उठकर, कहती है] – अब रहने दीजिये, अक़्ल नाम की कोई चीज़ आपके खोपड़े में नहीं। ढेरे के ढेरे बने रहोगे, करमठोक इंसान हो..अच्छी बातें आपको करनी आती नहीं, के 'कहीं लिजावूं सैर कराने, आज लाया हूँ पाली से गुलाब हलुआ..

मोहनजी –

[हाथ नचाते हुए, कहते हैं] – गालों के अन्दर घोड़े

दौड़ रहे हैं, खोपड़ी के अन्दर अक़्ल नाम की कोई चीज़ नहीं। टिफ़िन तैयार करते आती है मौत, ऊपर से बिचारी बोलती है मुँह खोलकर...लाओ, पाली से गुलाब हलुआ..?

राजू साहब –

[हँसी दबाकर कहते हैं] – उधर देखो, दयाल साहब। वह जा रहा है, मोहनिया..कैसा पागल है, यार? पहले तो उसको उतरना चाहिए था, प्लेटफ़ॉर्म संख्या पाँच पर..मगर यह पागल उतर गया, प्लेटफ़ॉर्म संख्या दो पर। अब पागलों की तरह लोगों से पूछ रहा है, गाड़ी के बारे में।

दयाल साहब –

मरने दो, इस पागल को। अभी जाकर पूछेगा, वेंडर से.. [मोहनजी की आवाज़, की नक़ल उतारते हुए बोलते हैं] कढ़ी खायोड़ा, पाली जाने वाली गाड़ी कब लगेगी?

राजू साहब –

[हँसते हुए, कहते हैं] – अरे यार, फिर वेंडर यही कहेगा.. [वेंडर की आवाज़, की नक़ल उतारते हुए कहते हैं] 'ठोकिरा, मैंने तो कढ़ी खायी नहीं, मगर बेचता ज़रूर हूँ। बोल,

कढ़ी लेनी हो तो पैसे निकाल और कह कितने रुपये की डालूँ कढ़ी की सब्ज़ी?' फिर पूछेगा जाकर, कुली से..यदि किसी ने, सही नहीं बताया तो ..?

सौभाग मलसा –

मुझे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता, तू नीला बैग लाता है या नहीं? नहीं लाएगा, तो मुझे थोड़ा-बहुत नुक़्सान हो जायेगा..जिसे मैं बर्दाश्त कर लूँगा। मगर जुलिट के साथ बातें करती हुई डी.वी.डी. ज़रूर बहन के पास भेज दूँगा, फिर देखना बहन ऐसे धोयेगी तुझे जैसे धोबी कपड़े को धो डालता है। फिर देखना..

मोहनजी –

और क्या देखूँ, जनाब?

सौभाग मलसा –

फिर देखना, एक डी.वी.डी. की कोपी भेजूँगा तेरे दफ़्तर। और दूसरी कोपी भेजूँगा, तेरे डी.एम. के पास। समझ गया, करम फूटोड़ा?

मोहनजी –

[भोला मुँह बनाकर, कहते हैं] – साला साहब, कौनसी डी.वी.डी.? कैसी बात कर रहे हैं, आप? मुझे आपकी बात,बिल्कुल समझ में नहीं आ रही है। कहीं आप भंग पीकर तो नहीं आ गए, जनाब? भंगेरी की तरह, करड़े-करड़े बोलते जा रहे हैं, आप?

मोहनजी –

[पाँव दबाते-दबाते कहते हैं] – लाडी बाई ये आपके पाँव नहीं है, ये गुलाब के पुष्प की पंखुड़िया है। आप इनको ज़मीन पर मत रखना, ये मैले हो जायेंगे।

[आदतों से लाचार मोहनजी प्यारी के पाँव दबाते-दबाते, अपने हाथ उसकी जाँघो से ऊपर ले जाने की कोशिश करते हैं। तभी तड़ाक करता दामिनी की तरह, प्यारी का थप्पड़ उनके गालों पर रसीद हो जाता है। थप्पड़ लगाकर, प्यारी बोलती है आँखें तरेरकर।]

प्यारी –

[थप्पड़ लगाकर, कहती है] – दूर रखो, अपना वासता मुँह। बदबू आ रही है, आपके मुँह से। ऐसा लगता है, मेरे पास

कोई हिड़किया कुत्ता [पागल-कुत्ता] आकर बैठ गया है?

मोहनजी –

[अपने गाल सहलाते हुए, कहते हैं] – लाडी बाई यों बेकार का ग़ुस्सा मत कीजिये, मेरे मुँह से जो गंध आ रही है, वह बदबू नहीं है....अरे लाडी बाई, यह तो ज़र्दे की सौरम है, राम क़सम इसे बदबू कहकर आप देसी ज़र्दे को बेइज़्ज़त न करें। आपकी क़सम, मैं सच्च कह रहा हूँ, के...

मोहनजी –

[ग़ुस्से में कहते हैं] – सब बिक गए, साले। सभी बदमाश है, ठोकिरे कढ़ी खायोड़े। दो दिन पहले मैं जयपुर गया था, [भद्दी गाली की पर्ची निकालकर, बाद में आगे कहते हैं] इनकी माँ की.....कमबख्तों को बहुत ऊँचा लिया, मगर ठोकिरा कढ़ी खायोड़ा..निकाले नहीं, मेरे ट्रांसफर आर्डर?

रतनजी –

साहब, आप दो दिन पहले ससुराल जाने की बात कह रहे थे? ससुराल जाते-जाते जयपुर कैसे पहुँच गये, जनाब?

रशीद भाई –

रतनजी, साहब बिल्कुल सत्य कह रहे हैं। अब आपको जुम्मे रात के दिन की बात बताता हूँ, सुनिये। बाद नमाज़ के वक़्त मेरे पास आया था, एक फोन।

ओमजी –

किसका फोन आया, जनाब? शायद, किसी रिश्तेदार का होगा? और, किसका आ सकता है?

रशीद भाई –

संघ के सेक्रेटरी साहब का आया था, फोन। [खीजते हुए कहते है] क्या आपके पास ही आ सकता है, संघ वालों के फोन? मेरे पास, नहीं आ सकते? सुनो, उन्होंने कहा के 'मोहनजी जयपुर आये थे हेड ऑफिस में, और सीधे आकर वे बड़े साहब से मिले और उनसे कहा..'

रतनजी –

आख़िर मोहनजी करेंगे, क्या? तेरी-मेरी शिकायतें, और क्या? यानी, मोती पिरोकर आ गये...

मोहनजी –

[उछलते हुए] – मैंने कुछ नहीं कहा, मुझ पर विश्वास रखो, कढ़ी खायोड़ा।

प्यारे लाल –

[अपनी गरदन छुड़ाने की कोशिश करता हुआ, कहता है] – छोड़ दीजिये, जीजाजी। आपको मेरी जीजी की क़सम, अगर गरदन नहीं छोड़ी तो मैं..

मोहनजी –

न तो तू क्या करेगा रे, कढ़ी खायोड़ा?

प्यारे लाल –

नहीं तो पूरी बात बता दूँगा, जीजी को। अभी तक मैंने कुछ भी नहीं बताया, जीजी को। अपना जूत्ता निकालकर आप, इस कुत्ते कमीने चम्पा लाल की पूजा कीजिये।

मोहनजी –

इसकी पूजा क्यों करूँ रे, कढ़ी खायोड़ा?

प्यारे लाल –

यह कुचक्र इसी कमीने ने चलाया था, आपको फँसाने का। जीजाजी आपको दण्ड देना है तो, इसे दीजिये। यह कमीना आपके पास खड़ा है, पकड़िये..जीजाजी।

[फिर, क्या? प्यारे लाल की गरदन छोड़कर, मोहनजी चम्पा लाल की गरदन पकड़ने की कोशिश करते हैं। मगर यह शैतानों का चाचा चम्पा लाल, उनके हाथ आने वाला कहाँ? वह कुचमादी का ठीकरा तो भाग छूटता है, और भागता-भागता अलग से कहता जा रहा है..]

चम्पा लाल –

[भागता-भागता, कहता है] – वाह जीजाजी, वाह। भूतिया नाडी की पाळ पर, आप कैसे नाचे नंग-धडंग होकर? [गुलाबा की आवाज़ की नक़ल करता हुआ, कहता है] मोहन लाल सेठ, क्या आपकी चड्डी का नाड़ा खोल दूँ आकर?

[भागकर वह, दूसरे केबीन में चला जाता है। उसके जाने के बाद, जुलिट गुलाब सिंह से कहती है]

जुलिट –

मगर गुलाब सिंह, मुझे यह समझ में नहीं आया..आख़िर, प्यारी और जुलिट का क्या माज़रा है?